आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 4/सितंबर 2024
Received: 20/09/2024; Published: 26/09/2024

कविता

अक्किलि बुद्धि हेरान

डॉ० गंगा प्रसाद शर्मा'गुणशेखर'
अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय भाषा संस्थान,
संपादक, भाखा तथा इंदु संचेतना
मो.8000691717

रात - रात भर-
जाग -जाग कर,
हलकू है हलकान ।

तोता, मैना से यह बोले,
राम करे कोई पिंजरा खोले ।
भूखे किसान का क्यों कुछ खाना ,
चलो उड़ चलें, मिला बहाना।
दाने दाने को परेशान ।

दो बीघे में धनी राम ने,
'काली मूँछ' लगाया ।
पर बदले में एक किलो भी,
धान्य न उसने पाया ।
राह न सूझे उसे एक भी -
अक्किलि बुद्धि हेरान ।

गेहूँ,धान, मटर के खेत,
हरहा चरें नित्य भर पेट।
रोटी पड़तीं नहीं तवा पर,
क्या खाएँ, क्या रखें नवा पर।
यही सोच कर हर किसान का,
कुनबा है हैरान।

****